



स्रष्टा का परम प्रसाद: प्रखर प्रज्ञा

जीवन साधना, प्रतिभा का उद्गम और युग परिवर्तन का विज्ञान (अध्याय ९ से १२ का सार)

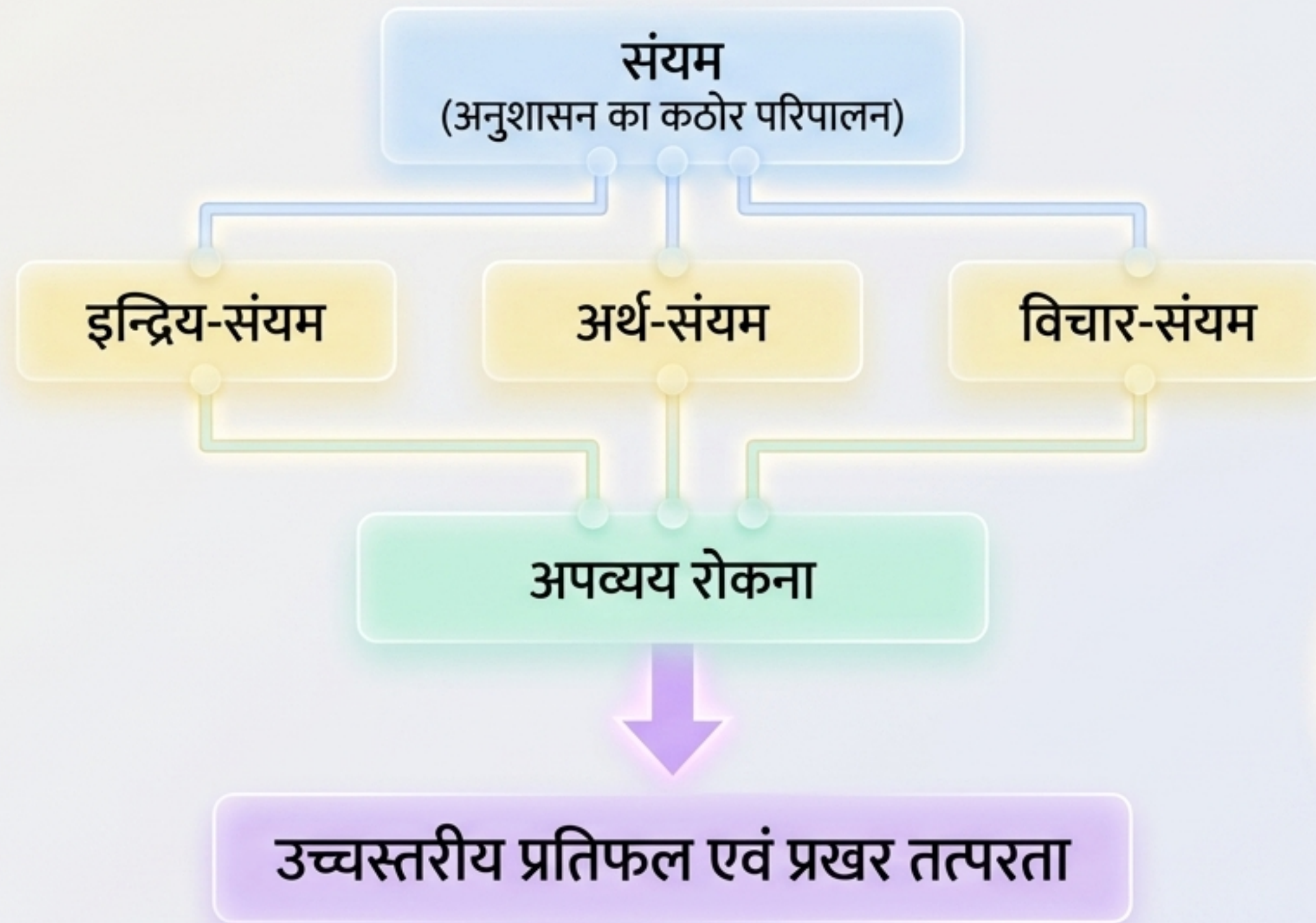
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास ।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



जीवन रूपी कच्चे लोहे को फौलाद में बदलने की क्रमिक प्रक्रिया।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप — सब बच्चों से कहियेगा मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रांति वेदमूर्ति तपोपिठ पण्डित श्रीराय शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीवन-साधना की वैज्ञानिक कार्यप्रणाली



साधना कोई जादू नहीं,
ऊर्जा संरक्षण का विज्ञान है।
कड़ाई स्वयं के साथ,
उदारता दूसरों के साथ।

कर्मकाण्डों का मनोविज्ञान

पूजा-अर्चा केवल प्रतीक है; वास्तविक उपासना मानवीय गरिमा को ढालने का विज्ञान है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहि – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगकृषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतीक	वैज्ञानिक/मनोवैज्ञानिक अर्थ
 दीपक जलाना	 स्वयं जलकर समाज को प्रकाश (ज्ञान) प्रदान करना।
 पुष्प चढ़ाना	 जीवन को सर्वांग सुंदर, कोमल व सुशोभित बनाना।
 अक्षत (चावल)	 अपनी आय का एक अंश परमार्थ के लिए नियमित दान करना।
 चन्दन लेपन	 अपने संपर्क क्षेत्र में विशिष्टता की सुगंध (सद्गुण) फैलाना।
 नैवेद्य (प्रसाद)	 स्वभाव और व्यवहार में मधुरता का अधिकाधिक समावेश।

आकर्षण का सार्वभौमिक नियम

सजातीय कणों का चुंबकत्व



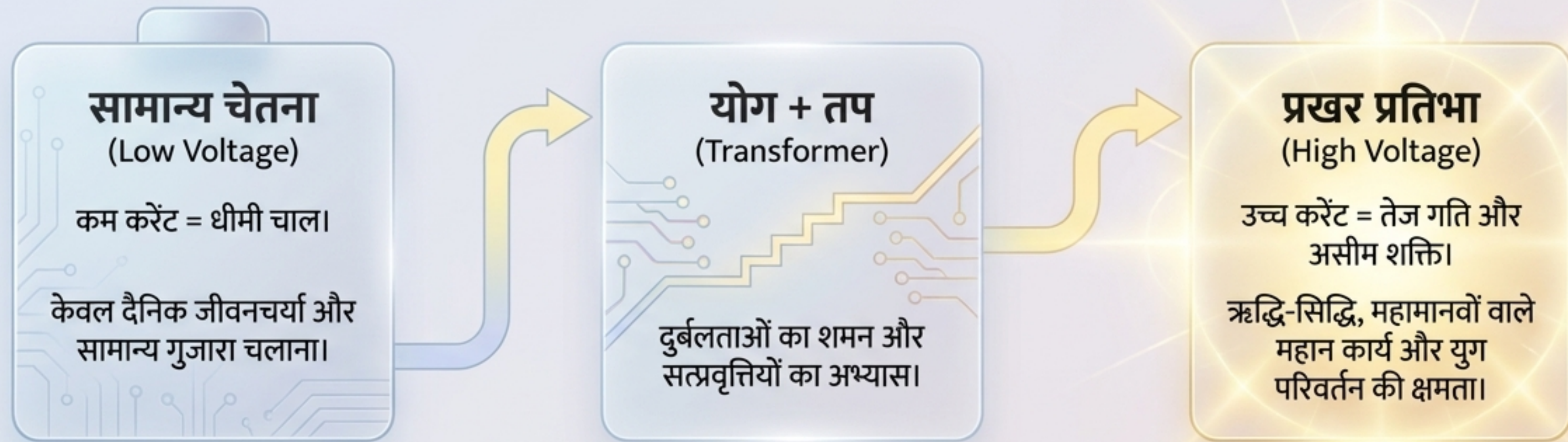
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा और आप सबसे कहेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रखर प्रतिभा का भौतिक विज्ञान

देवत्व कोई जादू नहीं, यह आत्म-जागरण की वह स्थिति है जहाँ प्रसुप्त शक्ति को 'हाई वोल्टेज' में बदल दिया जाता है।



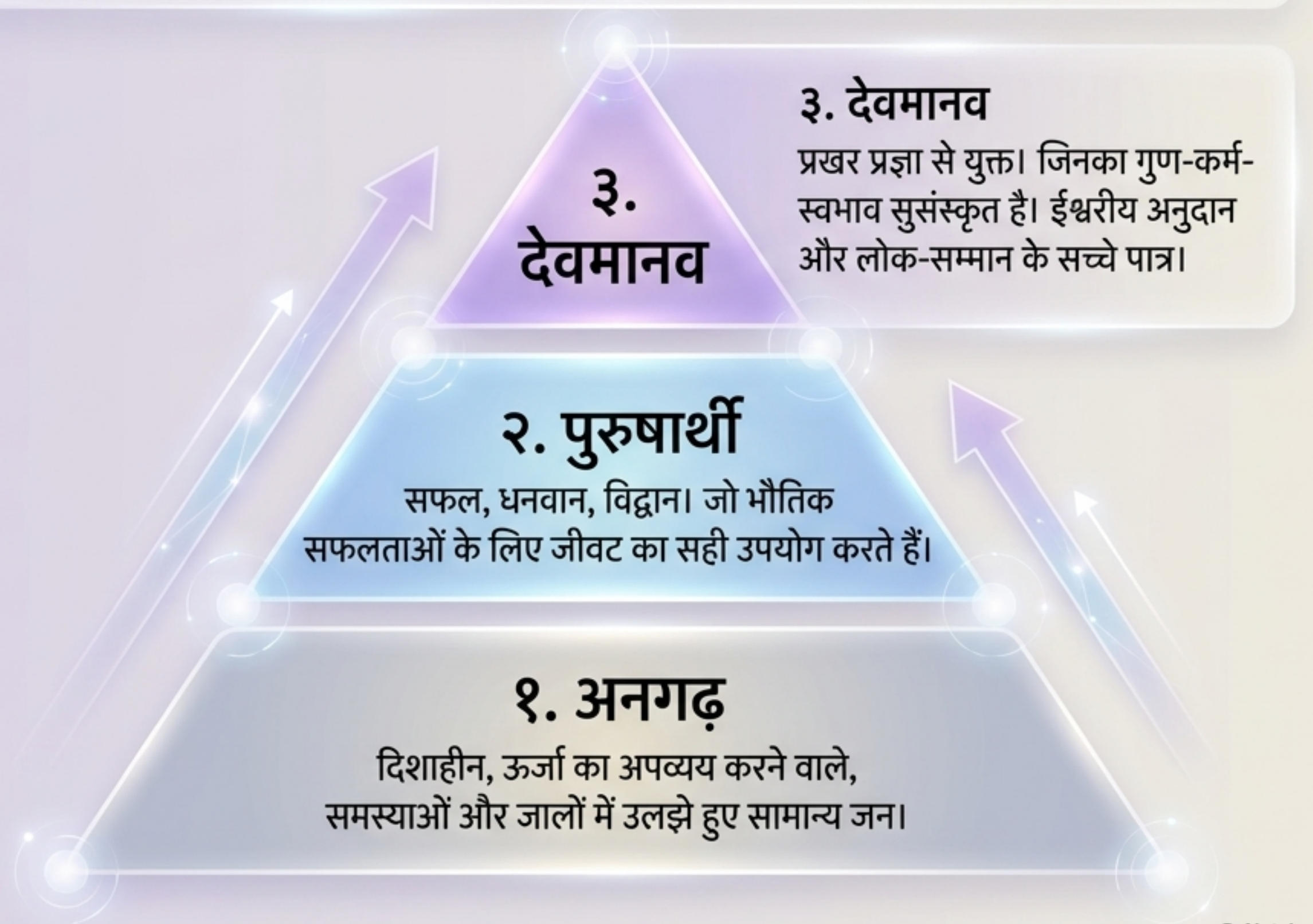
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

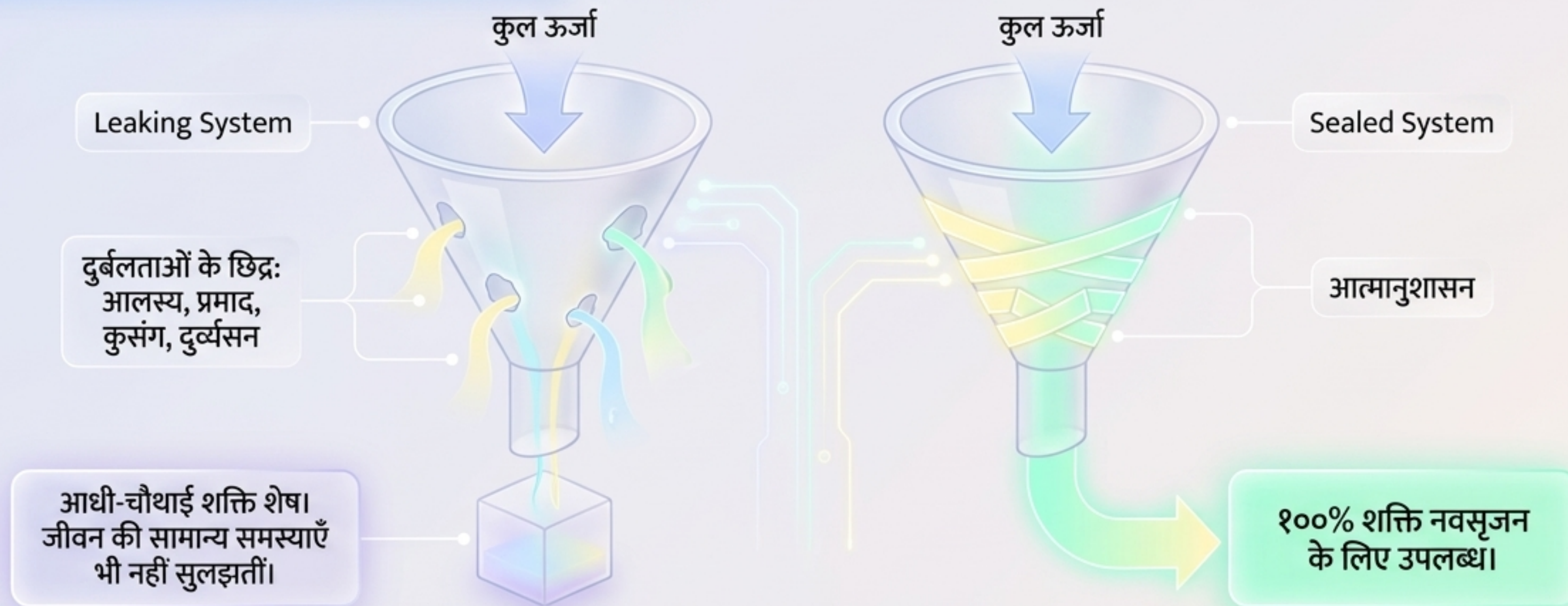
मानव विकास के तीन स्तर

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



ऊर्जा संरक्षण का सिद्धांत



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग परिवर्तन प्रतिभा ही करेगी

“

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि वेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

”

दूषित पर्यावरण +
भ्रष्ट आचरण का ध्वंस



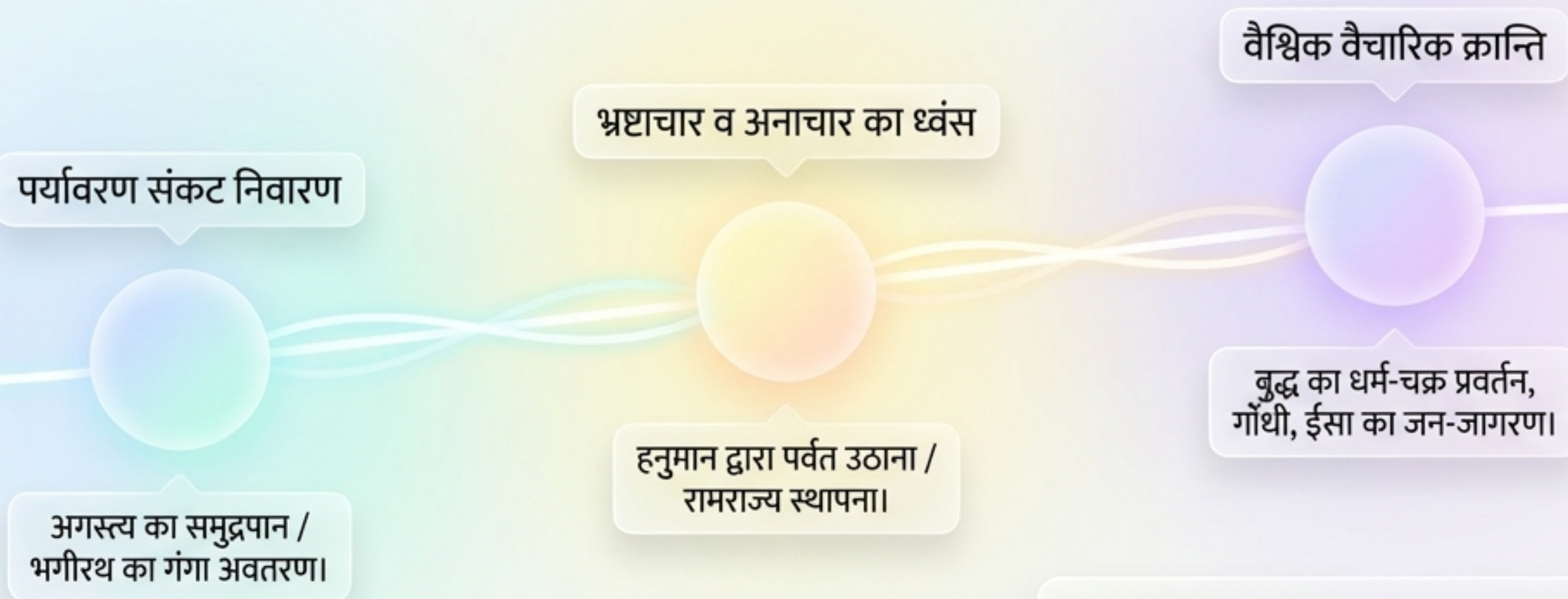
नवसृजन
(New Creation)

विज्ञान का नियम: किसी वस्तु को पिघलाने या रूप बदलने के लिए अत्यधिक ऊष्मा (Latent Heat of Transformation) चाहिए।

सृजन के लिए ध्वंस से कई गुना अधिक ऊर्जा चाहिए। एक फावड़े से मकान टूट सकता है, पर बनाने के लिए कुशल कारीगर चाहिए। यह भारी-भरकम काम केवल **‘वरिष्ठ प्रतिभासम्पन्न’** ही कर सकते हैं।

इतिहास के ऊर्जा-प्रेरक

समय स्वल्प होने पर भी, स्रष्टा की प्रेरणा और व्यक्ति के 'संकल्प बल' से असम्भव चमत्कार सम्भव हो जाते हैं।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

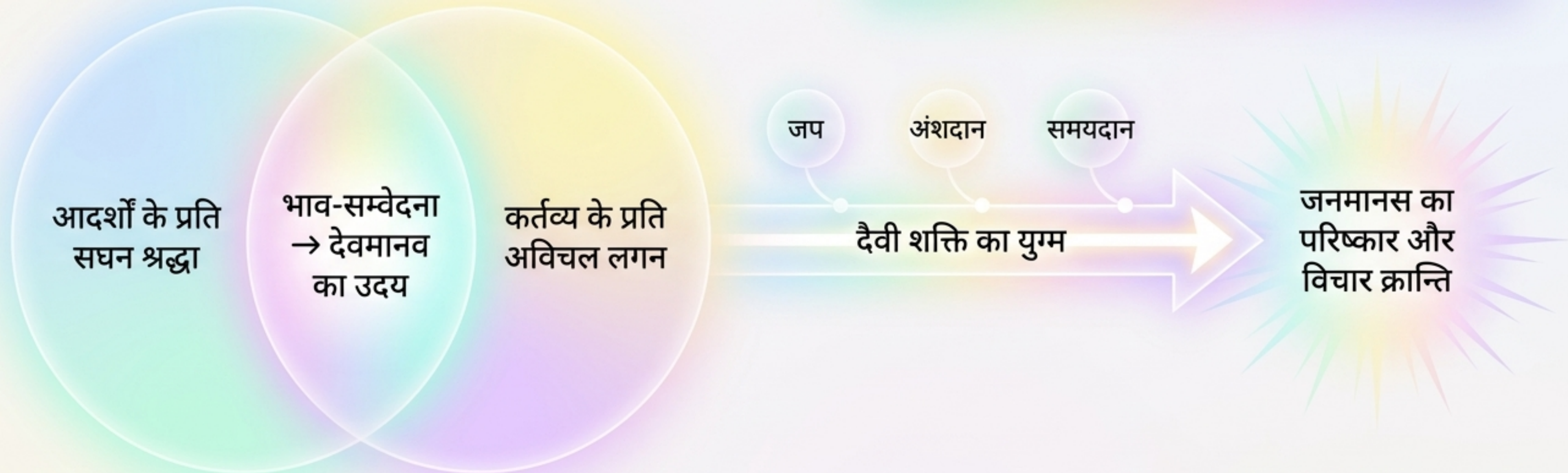
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

नवसृजन का समीकरण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

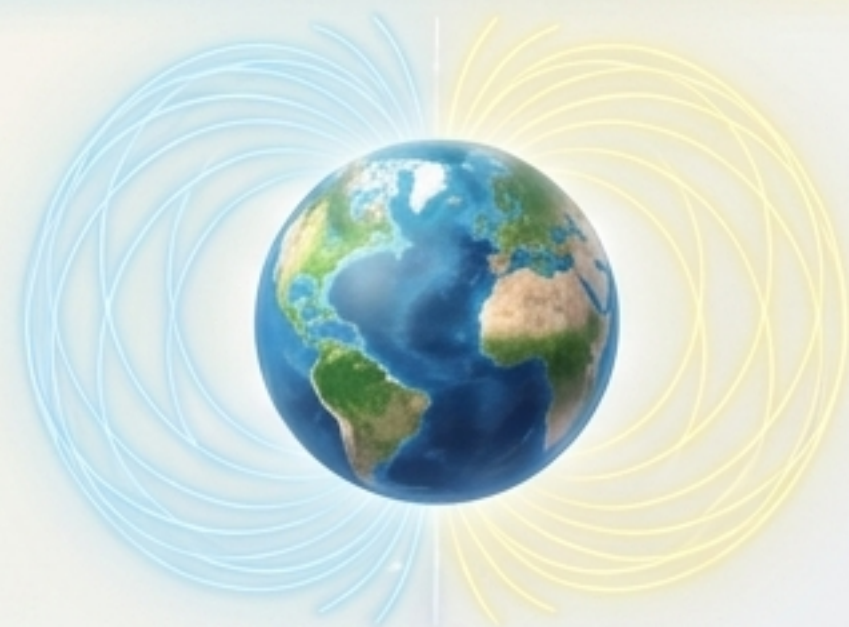
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



मानव मस्तिष्क: एक ब्रह्मांडीय चुंबक

हमारी आंतरिक रुचि तय करती है कि हम ब्रह्मांडीय कामधेनु से क्या आकर्षित करेंगे।

पृथ्वी (Earth)



- उत्तरी ध्रुव का गुरुत्वाकर्षण।
- अंतरिक्ष से आवश्यक भौतिक तत्व खींचना।
- निरर्थक कचरे को ध्रुव-मार्ग से बाहर फेंकना।

मनुष्य (Human)



- मानसिक चुंबकत्व (Mental Magnetism)।
- अपनी रुचि व प्रकृति के अनुरूप ब्रह्मांड से चेतन तत्व खींचना।
- दुर्गुणों का निष्कासन।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अनगढ़ता से सुगढ़ता: कुशल माली का विज्ञान

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा सब बच्चों से कहियेगा कि रे ज्ञान शरीर को मेरे ज्ञान शरीर को मेरे साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगन्नाथि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



प्रखर प्रज्ञा का सम्पूर्ण इंजन



नवसृजन के विश्वकर्मा बनें

यह समय केवल मूकदर्शक बने रहने का नहीं, सृजेता (Creator) बनने का है। गन्दगी फैलाना अनगढ़ लोगों का काम है, उसे साफ कर कलात्मक निर्माण करना विश्वकर्माओं का।

अपनी महत्वाकांक्षाओं में कटौती कर, समय, श्रम और मनोयोग को 'सत्प्रवृत्ति-संवर्धन' में लगाएँ।

क्या आपके अंतःकरण में इस परीक्षा की घड़ी में असाधारण कौशल दिखाने की उमंग उठ रही है?

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा

— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)